भा.कृ.अनु.प.-भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान, खंडवा रोड, इन्दौर-452001

फ़ाइल् क्रमांक. प्रेस नोट/प्रेस व पब्लिसिटी/2021/25 **दिनांक 12.08.2021**

प्रेस नोट

भारत की आजादी के 75 वर्षो के उपलक्ष में मनाये जा रहे "आजादी का अमृत महोत्सव" के अंतर्गत दिनांक 12 अगस्त, 2021 को भा.कृ.अनु.प.-भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान, इंदौर एवं ट्राइबल रिसर्च एवं ट्रेनिंग सेंटर, देवगढ़ बारिया (गुजरात) द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित "सोयाबीन की उत्पादन तकनिकी" पर कृषक प्रशिक्षण की प्रेस नोट

भारत सरकार एवं भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद्, नई दिल्ली के निर्देशानुसार देश की आजादी के 75 वर्षो के उपलक्ष्य में मनाये जा रहे "अमृत महोत्सव" के अंतर्गत दिनांक 12 अगस्त, 2021 को इन्दौर स्थित भा.कृ.अनु.प.-भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान (आई,सी.ए.आर. - आई.आई.एस.आर.) एवं ट्राइबल रिसर्च एवं ट्रेनिंग सेंटर, देवगढ़ बारिया (गुजरात) के संयुक्त प्रयास से गुजरात राज्य के सोयाबीन कृषकों के लिए "सोयाबीन की उत्पादन तकनिकी" विषय पर ऑनलाइन कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमे दाहोद, पंचमहल, वड़ोदरा एवं अमरेली जिलों के कुल 77 कृषकों ने भाग लिया. इसके उद्घाटन सत्र में संस्थान की निदेशक डॉ. नीता खांडेकर ने बताया की गुजरात राज्य में सोयाबीन के बढ़ते हुए क्षेत्र को ध्यान में रखते हुए नवीनतम किस्मों के साथ-साथ उत्पादन तकनिकी के प्रचार प्रसार हेतु किये जा रहे प्रयासों की पहली कड़ी के रूप में इस कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा हैं जो कि खाद्य तेल की आत्मनिर्भरता के लिए सकारात्मक कदम हैं. इस अवसर पर ट्राइबल रिसर्च एवं ट्रेनिंग सेंटर, देवगढ़ बारिया (गुजरात) के प्रमुख डॉ गिरिशभाई पटेल ने जानकारी दी कि गुजरात के आदिवासी बाहुल जिलों में लोकप्रिय सोयाबीन की फसल का क्षेत्रफल अब धीरे-धीरे अन्य जिलो में भी बढ़ने लगा है. उन्होंने यह भी बताया की सोयाबीन की एक लोकप्रिय किस्म एन आर सी 37 का भी प्रजनक बीज उत्पादन कार्यक्रम भी गुजरात में लिया जा रहा हैं.

इस ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुल 5 तकनिकी सत्रों का आयोजन किया गया जिसमे भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान के वैज्ञानिकों ने मार्गदर्शन एवं उपयुक्त जानकारी सहित प्रस्तुतीकरण एवं चर्चा की. इस अवसर पर डॉ . एस . डी. बिल्लोरे, प्रधान वैज्ञानिक (सस्य वैज्ञानिक) ने कहा कि सोयाबीन फसल के उत्पादन हेतु अनुशंसित सस्य क्रियाये एवं नवीनतम पद्धतियाँ' विषय पर जानकारी देते हुए बदलते हुए मौसम के परिपेक्ष में परंपरागत तरीकों से हटकर बी.बी.एफ या रिज एवं फरो पद्धति से बोवनी करनी चाहिए जो कि नमी संरक्षण के साथ-साथ अतिरिक्त जल निकासी में भी उपयोगी होगी . उन्होंने कहा की सूखे की अवस्था में जिन किसानों के पास सिंचाई कि व्यवस्था हैं, जमीन में दरारें पड़ने से पहले ही सिचाई कर देनी चाहिए और जिनके पास पानी की उपलब्धता नहीं हैं, वे डोरा-कुलपा-पलवार लगाये या अनुशंसित एन्टीट्रांस्पिरेन्ट जैसे पोटेशियम नाइट्रेट (1%) **या** मेग्नेशियम कार्बोनेट अथवा ग्लिसरॉल (5%) का छिड़काव करें.

एक अन्य तकनिकी सत्र में डॉ. राकेश कुमार वर्मा ने सोयाबीन की फसल में उगने वाले खरपतवार एवं उनके नियंत्रण हेतु अनुशंसित रासायनिक खरपतवारनाशकों बाबत जानकारी दी. उन्होंने कहा की खरपतवारों के प्रकार या उनकी खेत में सघनता को ध्यान में रख कर ही खरपतवारनाशक का चयन किया जाना चाहिए, जिसके छिडकाव हेतु **फ्लेट फैन अथवा फ्लड जेट नोजल** का उपयोग तथा प्रति हेक्टेयर 500 लीटर पानी की मात्रा अत्यंत आवश्यक है।

इस कड़ी में संस्थान के सेवानिवृत्त कीट वैज्ञानिक डॉ.ए .एन .शर्मा ने" सोयाबीन के प्रमुख हानिकारक कीट एवं उनके नियंत्रण हेतु समेकित कीट प्रबंधन पद्धति " पर व्याख्यान दिया जिसमे रासायनिक कीटनाशकों के प्रयोग के साथ-साथ अन्य पद्धतियों जैसे ट्रैप क्रॉप,फेरोमोंन ट्रैप इत्यादि को अपनाने की सलाह दी. उन्होंने यह भी कहा कि पीला मोज़ेक जैसे रोगों को फैलाने के लिए कारक कीट "सफ़ेद मक्खी" के नियंत्रण हेतु बीजोपचार के समय फफूंदनाशक के साथ-साथ कीटनाशक से बीजोपचार करना एक अत्यंत उपयोगी तरीका हैं.

इस अवसर पर डॉ .लक्ष्मण सिंह राजपूत, वैज्ञानिक (पादप रोग विज्ञान) ने सोयाबीन में आने वाले प्रमुख रोगों के लक्षण एवं उपचार के तरीकों पर चर्चा करते हुए फफूंदनाशक, कीटनाशक व जीवाणु कल्चर से बीजोपचार हेतु अनुशंसित तकनिकी की जानकारी दी. इसके लिए अनुशंसित पूर्वमिश्रित फफूंदनाशक थायोफिनेट मिथाईल +पायरोक्लोस्ट्रोबीन **अथवा** पेनफ्लूफेन+ ट्रायफ्लोक्सिस्ट्रोबीन 38 एफ.एस. (1 मि.ली/.कि.ग्रा .बीज) **अथवा** कार्बोक्सिन 37.5%+थाइरम 37.5% (3 ग्राम/कि.ग्रा .बीज) **अथवा** थाइरम 2 ग्राम+ एवं कार्बेन्डाजिम 1 ग्राम/ प्रति कि.ग्रा .बीजकी दर से से उपचारित करने के बाद अनुशंसित कीटनाशक थायामिथोक्सम 30 एफ.एस.(10 मि.ली .प्रति कि.गा .बीज) **अथवा** इमिडाक्लोप्रिड (1.25 मि.ली/.कि.ग्रा .बीज) से बीज को उपचारित करना चाहिए. इसके पश्चात अनुशंसित जैविक कल्चर ब्रेडीरायजोबियम +पी.एस.एम् दोनों के साथ 5 ग्राम/किग्रा .बीज कि दर मिलाकर बोवनी करना चाहिए.

अंतिम तकनिकी सत्र में डॉ मृणाल कुचलान, वरिष्ठ वैज्ञानिक (बीज प्रौद्योगिकी) द्वारा गुजरात राज्य के लिए अनुशंसित "सोयाबीन की नवीनतम किस्में, बीज उत्पादन, प्रसंस्करण एवं भण्डारण" विषय पर जानकारी देकर कहा कि एक बार किसी विश्वसनीय स्त्रोत से बीज क्रय करने के पश्चात किसान स्वयं ही अपने खेत पर आगामी वर्ष के लिए आवश्यक बीज बनाये जिसमे अन्य किस्मों के पौधों को उखाड़कर 350-450 आरपीएम पर गहाई करने में सावधानी बरते जिससे वे अच्छी गुणवत्ता वाले बीज का उत्पादन स्वयं ही कर सकते हैं. इसके लिए इच्छुक किसानों को एक विशेष प्रशिक्षण भी दिया जा सकता हैं.

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में कृषक-वैज्ञानिक परिचर्चा सत्र का भी आयोजन हुआ जिसमे प्रतिभागी कृषकों ने ज़ूम-चैट एवं यूट्यूब चैनल पर प्राप्त प्रश्नों/सुझावों/शंकाओं का समाधान किया गया. इस सम्पूर्ण प्रशिक्षण कार्यक्रम के आयोजन एवं समन्वयन भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान के डॉ. बी.यू. दुपारे, प्रधान वैज्ञानिक (कृषि विस्तार) व डॉ. सविता कोल्हे तथा ट्राइबल रिसर्च एवं ट्रेनिंग सेंटर, देवगढ़ बारिया (गुजरात) के डॉ. गिरीशभाई पटेल द्वारा किया गया.